



Original Article

‘कबाली’ फिल्म में सामाजिक संघर्ष का चित्रण

प्रा. भिमाशंकर लक्ष्मण गायकवाड

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

सदगुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130373

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 382 - 385

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 16 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. भिमाशंकर लक्ष्मण गायकवाड

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787298

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787298>



Creative Commons



सार:

भारतीय समाज व्यवस्था जाति पर आधारित मानी जाती है। जाति के आधार पर ही उँच – नीच माना जाता है। जाति के नाम पर ही समाज में विषमता और असमानता दिखाई देती है। दलितों को हमेशा शूद्र मानकर उनका शोषण किया जाता है। उनके मानवीय अधिकारों का हनन सवर्णों ने किया था। उन्हें साधन सुविधाओं से वंचित रखा गया है। दलितों को अपना जीवन अज्ञान, गरीबी और अंधकार में बिता रहे थे। दलितों का शोषण ऐतिहासिक वास्तव के रूप में देखा जाता है। दलितों के साथ होनेवाले अन्याय, अत्याचार और शोषण का विरोध साहित्य और सिनेमा के माध्यम से किया हुआ दिखाई देता है। कबाली फिल्म के निर्देशक पा. रंजित ने दलितों का सामाजिक संघर्ष, स्वाभिमान, आत्मसम्मान और शोषण का विरोध का चित्रण सशक्त रूप में किया है। फिल्म का नायक कबाली शोषकों के खिलाफ संघर्ष करते हुए शोषितों के मन में चेतना निर्माण करता है। कबाली फिल्म सामाजिक न्याय और समानता के विचार को समाज के सामने लाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

मुख्य शब्द: दलित, समता, स्वाभिमान, सामाजिक न्याय, सिनेमा और समाज, शोषण, कबाली

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. भिमाशंकर लक्ष्मण गायकवाड. (2026). 'कबाली' फिल्म में सामाजिक संघर्ष का चित्रण. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 382 - 385. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787298>

प्रस्तावना:

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति के कारण दलितों को सदियों से अन्याय, अत्याचार और शोषण का सामना करना पड़ा है। वर्तमान समय में सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन

का प्रभावी माध्यम के रूप में दिखाई देता है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए कबाली फिल्म में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इस फिल्म के नायक के रूप में रजनीकांत है। निर्देशक पा. रंजित ने अपने सिनेमा के माध्यम से दलितों की समस्याओं और उनके संघर्ष को केंद्र में रखा है। इस फिल्म में कि दलित



समाज केवल शोषण का शिकार नहीं है, बल्कि वह अपने हक और अधिकारों के लिए संघर्ष करनेवाला जागरूक और संगठित दिखाई है।

शोध का उद्देश्य:

1. कबाली फिल्म में दलितों के सामाजिक और आर्थिक शोषण का अध्ययन करना।
2. कबाली फिल्म में दलित चेतना और प्रतिरोध के स्वर का विश्लेषण करना।
3. सिनेमा के माध्यम से सामाजिक न्याय के विचार को समझना।

शोध परिकल्पना:

यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि आधुनिक भारतीय सिनेमा में दलित विमर्श का प्रभाव बढ़ रहा है और Kabali जैसी फिल्में सामाजिक न्याय और समानता के विचार को व्यापक समाज तक पहुँचाने का कार्य कर रही हैं।

शोध पद्धति:

यह शोध मुख्यतः **विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति** पर आधारित है।

- फिल्म की कथा, पात्रों और संवादों का अध्ययन किया गया है।
- दलित विमर्श से संबंधित सामाजिक और सांस्कृतिक सिद्धांतों का संदर्भ लिया गया है।
- फिल्म के माध्यम से प्रस्तुत सामाजिक संदेश का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

फिल्म की पृष्ठभूमि:

‘कबाली’ (2016) पा. रंजीत द्वारा निर्देशित एक गैंगस्टर-ड्रामा फिल्म है, जिसमें रजनीकांत ने एक बुजुर्ग डॉन की भूमिका निभाई है। भारतीय सिनेमा में गैंगस्टर फिल्मों की परंपरा प्रायः हिंसा, प्रतिशोध और शक्ति-प्रदर्शन तक सीमित रही है। किंतु ‘कबाली’ (2016) इस परंपरा को तोड़ते हुए गैंगस्टर कथा के भीतर दलित अस्मिता, प्रवासी श्रमिक जीवन और सामाजिक न्याय के विमर्श को समाहित करती है। इस फिल्म में एक बिल्कुल अलग रजनीकांत को देखा, हमने पिछले 25-30 सालों में नहीं देखा था। कोई अतिरंजित हरकतें नहीं, कोई समानांतर कॉमेडी नहीं, सिगरेट या बबल गम हवा में फेंकने जैसी हरकतें नहीं, और सबसे महत्वपूर्ण बात, पेड़ों के आसपास 20-25 साल के युवाओं के पीछे युगल गीत गाते हुए भागना वगैरह नहीं। रंजीत द्वारा रजनीकांत का किरदार बेहद ताजगी भरा है, जो अभिनेता के रूप में खूब भाता है। उनका यह काम सराहनीय है कि केवल सिर्फ दो फिल्मों बना चुके इतने युवा निर्देशक के साथ काम करने का फैसला किया। 65 साल की उम्र में उन्होंने इतनी साहसिक पटकथा और निर्देशक को चुना। फिल्म की कहानी मलेशिया में बसे तमिल मजदूरों के जीवन पर आधारित है। औपनिवेशिक काल में अनेक भारतीय मजदूरों को बागानों और उद्योगों में काम करने के लिए विदेश भेजा गया था।

कबालेश्वरन (रजनीकांत) 25 साल जेल में रहने के बाद रिहा होते हैं और अपनी पत्नी (राधिका आप्टे) और बेटी की तलाश करते हुए गैंगवार में फंस जाते हैं। दो गिरोहों के बीच लड़ाई चल रही है। कबाली उनमें से एक गिरोह का सरगना है। ये गिरोह नशामुक्ति और तमिल शिक्षा जैसे अच्छे कार्यों में लगा हुआ है। फिल्म कबाली के जीवन के उस दौर पर केंद्रित है, जब वह लंबी कैद के बाद वापस लौटता है। उस विनाशकारी दौर के



बाद का उसका सफर ही कबाली की कहानी है। मलेशिया में काम करनेवाले दलित मजदूरों को सामाजिक भेदभाव, आर्थिक असमानता और कठोर श्रम की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह फिल्म मलेशिया में तमिल मूल के लोगों के संघर्षों और रंजीत की यथार्थवादी शैली दिखाई देती है।

सामाजिक शोषण के खिलाफ संघर्ष:

मलेशिया के मजदूरों में अधिकांश भारतीय मूल के दलित हैं, जिन्हें गुलामों की तरह रखा जाता है और उनके श्रम का शोषण किया जाता है। कबाली इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है। उच्च वर्ग को कबाली का यह सूट पहनना और उसका आर्थिक रूप से सफल होना खटकता है, जो उसके शोषण का मुख्य कारण बनता है। कबाली का सूट पहनना केवल एक फैशन नहीं है बल्कि यह सामाजिक सम्मान और पहचान का प्रतीक है। कबाली कहता है, "हमारे कपड़े ही हमारा प्रतिरोध हैं"।¹ जो गांधीवादी सादगी के बजाय आंबेडकरवादी गरिमा पर जोर देता है। भारतीय समाज में लंबे समय तक दलितों को सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित रखा गया था। कबाली का सूट पहनना इस बात का संकेत है कि दलित समाज अब सम्मान और आत्मविश्वास के साथ समाज में अपनी जगह बना रहा है। फिल्म में दलितों को समाज के निम्न स्तर पर रखा गया है। उन्हें सम्मानजनक जीवन और समान अवसरों से वंचित रखा जाता है। यह सामाजिक संरचना उन्हें लगातार हाशिये पर धकेलती रहती है। जातिवाद केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि विदेशों में भी यह किस तरह शोषक वर्ग के हाथों का हथियार बना हुआ है। सत्ता में बैठे लोग कैसे दलितों को संगठित होने से रोकते हैं और उन्हें अपराध की दुनिया में धकेल देते हैं। 'कबाली' में दलित वर्ग को केवल

'बेचारा' या 'पीड़ित' के रूप में नहीं दिखाया गया है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए दिखाया गया है। कबाली 'फ्री लाइफ फाउंडेशन' के जरिए युवाओं को शोषण से बाहर निकाल कर उन्हें गरिमापूर्ण जीवन देने का प्रयास करता है। 'कबाली' केवल एक व्यक्तिगत बदले की कहानी नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक चेतना का घोष है।

आर्थिक शोषण के खिलाफ संघर्ष:

दलित मजदूरों से कठिन श्रम करवाया जाता है, लेकिन उन्हें उचित वेतन और सुविधाएँ नहीं मिलतीं। पूँजीवादी और सत्ता-संपन्न वर्ग उनके श्रम का शोषण करता है। मलेशिया में रहने वाले भारतीय, चीनियों से कमतर क्यों नहीं हैं, जिन्हें ज्यादा वेतन मिलता है। शुरुआती समय में इन मजदूरों को रबर और ताड़ (palm) के बागानों में बेहद खराब परिस्थितियों में रखा जाता था। फिल्म यह दिखाती है कि कैसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी वे गरीबी और जातिगत भेदभाव के चक्र में फँसते रहे। फिल्म में एक संवाद है कि "भारतीय अपने साथ कुछ और नहीं लाए, बस अपनी जाति लेकर आए"।² जो दर्शाता है कि सात समंदर पार जाने के बाद भी भारतीय समाज की जातिगत बुराईयाँ वहाँ भी बरकरार रहीं। तमिलनेसन (नासिर) उत्पीड़न के खिलाफ सड़कों पर उतरता है। भारत में ज्यादातर लोगों को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व और अन्य देशों में काम करने वाले तमिलों को किन मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। मलेशिया में आर्थिक अवसरों की कमी और भेदभाव के कारण कई तमिल युवा अपराध की दुनिया में धकेले गए। कबाली का किरदार इसी पृष्ठभूमि से निकलता है जो अपने समुदाय के अधिकारों के लिए 'डॉन' बनता है।



सांस्कृतिक शोषण खिलाफ संघर्ष:

फिल्म के दृश्यों में कबाली को किताबें (जैसे 'माय फादर्स बालिया') पढ़ते हुए दिखाया गया है, जो दलितों की वैचारिक क्रांति का प्रतीक है। शोषक वर्ग ने हमेशा दलितों को शिक्षा और उनके इतिहास से दूर रखने की कोशिश की है, जिसे यह फिल्म उजागर करती है। दलितों को शिक्षा और सांस्कृतिक पहचान से दूर रखने का प्रयास भी शोषण का एक रूप है। फिल्म यह दिखाती है कि शिक्षा और आत्मसम्मान के माध्यम से ही इस स्थिति को बदला जा सकता है। फिल्म में दिखाई गई मजदूर बस्तियाँ आर्थिक असमानता और वर्गीय शोषण का प्रतीक हैं। ये दृश्य दर्शाते हैं कि किस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूर और दलित वर्ग को हाशिये पर रखा जाता है। वह श्रमिकों के अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष करता है। कबाली कहता है-“हम अपराधी नहीं, मजदूरों के अधिकार की आवाज़ हैं।”³ सत्ता-तंत्र और अपराध-जगत के गठजोड़ के कारण उसे जेल भेज दिया जाता है। वह श्रमिकों के अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष करता है। सत्ता-तंत्र और अपराध-जगत के गठजोड़ के कारण उसे जेल भेज दिया जाता है। 25 वर्षों के बाद उसकी रिहाई होती है। वह अपने अतीत, बिछड़े परिवार और शोषणकारी ताकतों से सामना करता है। फिल्म की संरचना फ्लैशबैक शैली में है, जिसमें वर्तमान और अतीत के प्रसंग समानांतर चलते हैं। यह संरचना नायक की स्मृतियों और सामाजिक इतिहास को जोड़ती है। कबाली का संघर्ष केवल व्यक्तिगत प्रतिशोध नहीं, बल्कि प्रवासी समुदाय की सामूहिक अस्मिता का संघर्ष है।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कबाली फिल्म दलितों के शोषण, संघर्ष और आत्मसम्मान की भावना को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया है। निर्देशक पा. रंजित ने इस फिल्म के माध्यम से सामाजिक न्याय और समानता का सशक्त संदेश दिया है। फिल्म यह दर्शाती है कि दलित समाज अब केवल शोषण का शिकार नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली एक जागरूक शक्ति बन चुका है। यह फिल्म एक पारंपरिक मसाला मनोरंजक नहीं है, बल्कि एक चरित्र-प्रधान ड्रामा है। फिल्म कबाली के जीवन के उस दौर पर केंद्रित है, जब वह लंबी कैद के बाद वापस लौटता है। उस विनाशकारी दौर के बाद का उसका सफर ही कबाली की कहानी है। फिल्म कबाली के जीवन के उस दौर पर केंद्रित है, जब वह लंबी कैद के बाद वापस लौटता है। उस विनाशकारी दौर के बाद का उसका सफर ही कबाली की कहानी है। पा. रंजित ने फिल्म के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि दलित समाज की पहचान केवल शोषण की कथा नहीं है बल्कि वह संघर्ष, आत्मसम्मान और सामाजिक परिवर्तन की कहानी भी है।

संदर्भ:

1. कबाली
2. पा. रंजित – फिल्म संबंधी साक्षात्कार और लेख।